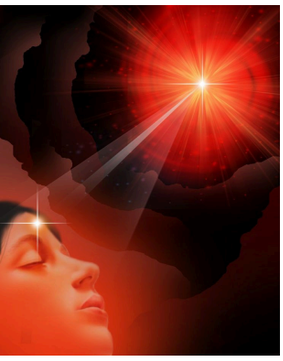

08-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - जब तक जीना है बाप को याद करना है, याद से ही आयु बढ़ेगी, पढ़ाई का तन्त (सार) ही है याद"

प्रश्नः- तुम बच्चों का अतीन्द्रिय सुख गाया हुआ है, क्यों?

उत्तर:- क्योंकि तुम सदा ही बाबा की याद में खुशियाँ मनाते हो, अभी तुम्हारी सदा ही क्रिसमस है। तुम्हें भगवान पढ़ाते हैं, इससे बड़ी खुशी और क्या होगी, यह रोज़ की खुशी है इसलिए तुम्हारा ही अतीन्द्रिय सुख गाया हुआ है।

गीत:-नयन हीन को राह दिखाओ प्रभू..... Click

नैन हीन को राह दिखा प्रभू (२)
पग-पग ठोकर खाऊँ मैं
नैन हीन को राह दिखा प्रभू पग-पग ठोकर खाऊँ मैं
नैन हीन को

तुम्हरी नगरिया की कठिन डगरिया (२)
चलत चलत गिर जाऊँ मैं, प्रभू
नैन हीन को राह दिखा प्रभू पग-पग ठोकर खाऊँ मैं
नैन हीन को राह दिखा प्रभू

चहूँ ओर मेरे घोर अंधेरा भूल ना जाऊँ द्वार तेरा (२)
एक बार प्रभू हाथ पकड़ लो (३)
मन का दीप जलाऊँ मैं
प्रभू -
नैन हीन को राह दिखा प्रभू पग-पग ठोकर खाऊँ मैं
नैन हीन को

ओम् शान्ति। ज्ञान का तीसरा नेत्र देने वाला रूहानी बाप रूहानी बच्चों को समझाते हैं। ज्ञान का तीसरा नेत्र सिवाए बाप के कोई दे नहीं सकता। तो अभी बच्चों को ज्ञान का नेत्र मिला है।

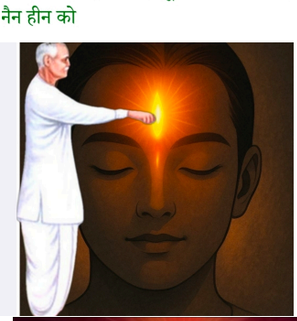

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Exclusive Authority of Shiv baba

अभी बाप ने समझाया है कि भक्ति मार्ग है ही अन्धियारा मार्ग। जैसे रात में सोझरा नहीं होता है तो मनुष्य धक्के खाते हैं। गाया भी जाता है ब्रह्मा की रात, ब्रह्मा का दिन। सतयुग में यह नहीं कहेंगे कि हमको राह बताओ क्योंकि अभी तुमको राह मिल रही है। बाप आकरके मुक्तिधाम और जीवनमुक्ति धाम की राह बता रहे हैं। अभी तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। अभी जानते हो कि बाकी थोड़ा समय है, दुनिया तो बदलने वाली है। यह तो गीत भी बने हुए हैं दुनिया बदलने वाली है.... परन्तु मनुष्य बिचारे जानते नहीं हैं कि दुनिया कब बदलनी है, कैसे बदलनी है, कौन बदलाते हैं क्योंकि तीसरा नेत्र तो ज्ञान का है नहीं। अभी तुम बच्चों को यह तीसरा नेत्र मिला है जिससे तुम इस सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो। और यही तुम्हारी बुद्धि में ज्ञान की सैक्रीन है। जैसे थोड़ी-सी सैक्रीन बहुत मीठी होती है वैसे यह ज्ञान के दो अक्षर 'मनमनाभव....' यही सबसे मीठी चीज़ है, बस बाप को याद करो।

दुनिया बदल रही है आँसू बहाने वाले
आँसू बहाने वाले
तूफ़ान आँसुओं का पलकों में अब छुपा ले
आँसू बहाने वाले

(दिल मेरा तुझ से बोले
आँसू बना ले शोले) -२
उम्मीद की किरण से ये दिल का दाग़ धो ले
इन ग़म की आँधियों में मन के दिये जला ले
आँसू बहाने वाले
तूफ़ान आँसुओं का पलकों में अब छुपा ले
आँसू बहाने वाले

(अब दूर कर अंधेरा
चमकेगा फिर सवेरा) -२
तुझसे नज़र मिला कर भर आया दिल भी मेरा
उजड़ी जवानियों से बिगड़ी को तू बना ले
आँसू बहाने वाले
तूफ़ान आँसुओं का पलकों में अब छुपा ले
आँसू बहाने वाले

(तू भी तो अब बदल जा
ये वक़्त है सम्भल जा) -२
रोकेगा कौन तुझको एक तीर बन के चल जा
मैं दिल का साज़ छेड़ूँ तू सुख के गीत गा ले
आँसू बहाने वाले
तूफ़ान आँसुओं का पलकों में अब छुपा ले
आँसू बहाने वाले

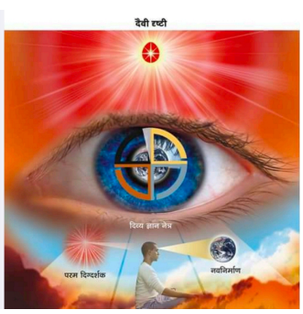

बाप आते हैं और आकरके रास्ता बताते हैं। कहाँ का रास्ता बताते हैं? शान्तिधाम और सुखधाम का। तो बच्चों को खुशी होती है। दुनिया नहीं जानती है कि खुशियाँ कब मनाई जाती हैं? खुशियाँ तो नई दुनिया में मनाई जायेंगी ना। यह तो बिल्कुल कॉमन बात है कि पुरानी दुनिया में खुशियाँ कहाँ से आई? पुरानी दुनिया में मनुष्य त्राहि-त्राहि कर रहे हैं क्योंकि तमोप्रधान हैं।

तमोप्रधान दुनिया में खुशियाँ कहाँ से आई? सतयुग का ज्ञान तो कोई में भी नहीं है, इसलिए बिचारे यहाँ खुशियां मनाते रहते हैं। देखो,

क्रिसमस की खुशियां भी कितनी मनाते हैं। बाबा तो कहते हैं कि अगर खुशियों की बात पूछनी हो तो गोप-गोपियों से (मेरे बच्चों से) पूछो क्योंकि

बाप बहुत सहज रास्ता बता रहे हैं। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए, अपने धन्धेधोरी का कर्तव्य करते हुए कमल फूल के समान रहो और मुझे याद करो। जैसे आशिक-माशूक होते हैं ना, वह भी धन्धाधोरी करते एक-दो को याद करते रहते हैं। उनको साक्षात्कार भी होते हैं जैसे लैला-मजनू, हीरा-रांझा,

Mind very well... Click

very sweet song for माशूक शिवबाबा। by आत्मा- आशिक

08-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वो विकार के लिए एक-दो के आशिक नहीं होते हैं। उनका प्यार गाया हुआ है। उसमें एक-दो के आशिक होते हैं। लेकिन यहाँ वह बात नहीं है। यहाँ तो तुम जन्म-जन्मान्तर उस माशूक के आशिक ही रहे हो। वह माशूक तुम्हारा आशिक नहीं है। तुम उनको बुलाते हो यहाँ आने के लिए, हे भगवान नयन हीन को आकरके राह बताओ। तुमने आधाकल्प बुलाया है। जब दु:ख ज्यादा होता है तो जास्ती बुलाते हैं। जास्ती दु:ख में जास्ती सिमरण करने वाले भी होते हैं। देखो, अभी कितने याद करने वाले ढेर के ढेर हैं। गाया हुआ है ना - दु:ख में सिमरण सब करें...... जितना देरी होती जाती है, उतना तमोप्रधान ज्यादा होते जाते हैं। तो तुम चढ़ रहे हो, वह और ही उतर रहे हैं क्योंकि जब तक विनाश हो तब तक तमोप्रधानता वृद्धि को पाती रहती है। दिन-प्रतिदिन माया भी तमोप्रधान, वृद्धि को पाती जाती है। इस समय बाप भी सर्वशक्तिमान् है, तो माया भी फिर सर्वशक्तिमान् इस समय में है। वह भी जबरदस्त है।

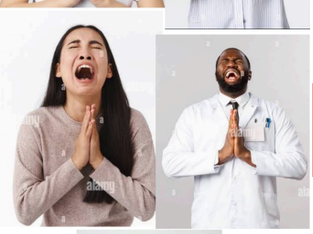

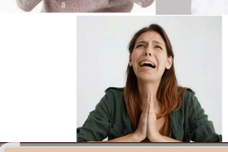

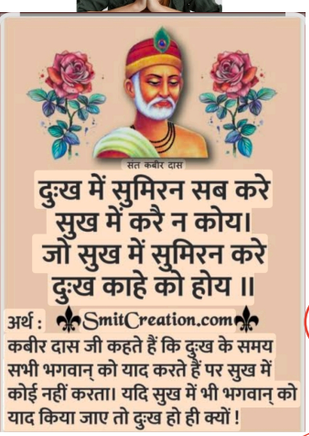

Point to be Noted

Points: ज्ञा

imp.

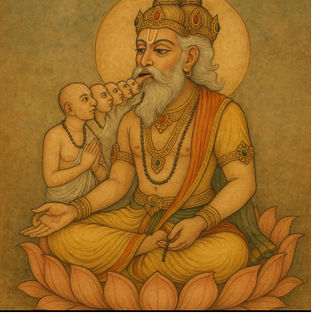

तुम बच्चे इस समय ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण कुल भूषण हो। तुम्हारा है सर्वोत्तम कुल, इसको कहा जाता है ऊंच ते ऊंच कुल। इस समय तुम्हारा यह जीवन अमूल्य है इसलिए इस जीवन की (शरीर की) सम्भाल भी करनी चाहिए क्योंकि पांच विकारों के कारण शरीर की भी आयु तो कमती होती जाती है ना। तो बाबा कहते हैं इस समय पांच विकारों को छोड़कर योग में रहो तो आयु बढ़ती रहेगी। आयु बढ़ते-बढ़ते भविष्य में तुम्हारी आयु 150 वर्ष की हो जायेगी। अभी नहीं इसलिए बाप कहते हैं कि इस शरीर की भी बहुत सम्भाल रखनी चाहिए। नहीं तो कहते हैं यह शरीर काम का नहीं है, मिट्टी का पुतला है। अभी तुम बच्चों को समझ मिलती है कि जब तक जीना है बाबा को याद करना है। आत्मा बाबा को याद करती है - क्यों? वर्से के लिए। बाप कहते हैं तुम अपने को आत्मा समझकर बाप को याद करो और दैवी गुण धारण करो तो तुम फिर ऐसे बन जायेंगे। तो बच्चों को पढ़ाई अच्छी तरह पढ़नी चाहिए। पढ़ाई में

Attention..!

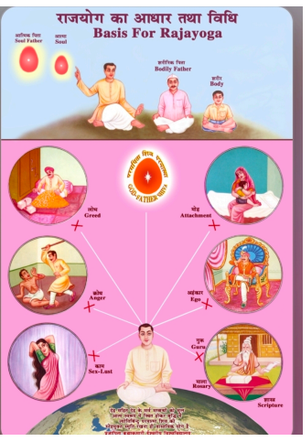

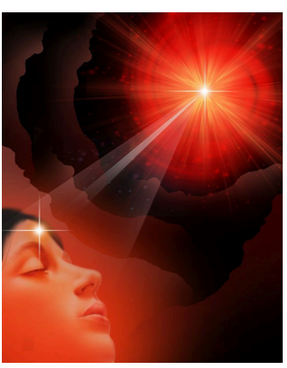

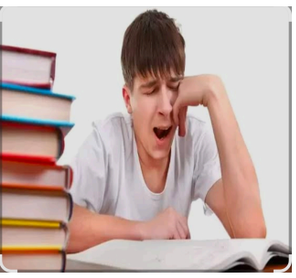

सुस्ती आदि नहीं करनी चाहिए नहीं तो नापास हो जायेंगे। बहुत कम पद पायेंगे। पढ़ाई में भी मुख्य बात यह है जिसको तन्त कहा जाता है कि बाप को याद करो। जब प्रदर्शनी में या सेन्टर पर कोई भी आते हैं तो उनको पहले-पहले यह समझाओ कि बाबा को याद करो क्योंकि वह ऊंच ते ऊंच है। तो ऊंचे ते ऊंचे को ही याद करना चाहिए, उनसे कम को थोड़ेही याद करना चाहिए। कहते हैं ऊंचे से ऊंचा भगवान। भगवान ही तो नई दुनिया की स्थापना करने वाले हैं। देखो, बाप भी कहते हैं नई दुनिया की स्थापना मैं करता हूँ इसलिए तुम मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायें। तो यह पक्का याद कर लो क्योंकि बाप पतित-पावन है ना। वह यही कहते हैं कि जब तुम मुझे पतित-पावन कहते हो तो तुम तमोप्रधान हो, बहुत पतित हो, अभी तुम पावन बनो।

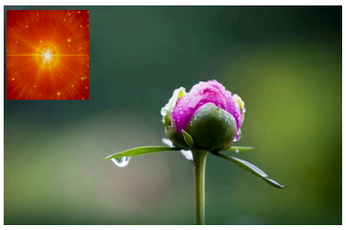

बाप आकरके बच्चों को समझाते हैं कि तुम्हारे अभी सुख के दिन आने वाले हैं, दु:ख के दिन पूरे हुए हैं, पुकारते भी हो - हे दु:ख हर्ता, सुख दाता।

तो जानते तो हो ना कि बरोबर सतयुग में सब सुखी ही सुखी हैं। तो बाप बच्चों को कहते हैं कि सभी शान्तिधाम और सुखधाम को याद करते रहो। यह है संगमयुग, खिवैया तुमको पार ले जाते हैं। बाकी इसमें कोई खिवैया या नईया की बात है नहीं। यह तो महिमा कर देते हैं कि नईया को पार लगाओ। अब एक की नईया तो पार नहीं लगनी है ना। सारे दुनिया की नईया को पार लगाना है। यह सारी दुनिया जैसे एक बहुत बड़ा जहाज है इनको पार लगाते हैं। तो तुम बच्चों को बहुत खुशी मनानी चाहिए क्योंकि तुम्हारे लिए सदैव खुशी है, सदैव क्रिसमस है। जब से तुम बच्चों को बाप मिला है तुम्हारी क्रिसमस सदैव है इसलिए अतीन्द्रिय सुख गाया हुआ है। देखो, Brahma यह सदैव खुश रहते हैं, क्यों? अरे बेहद का बाप मिला है! वह हमको पढ़ा रहे हैं। तो यह रोज़ की खुशी होनी चाहिए ना। बेहद का बाप पढ़ा रहे हैं वाह! कभी कोई ने सुना? गीता में भी भगवानुवाच है कि मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ, जैसे वह लोग बैरिस्टरी योग, सर्जनरी योग सिखलाते हैं, मैं तुम

Refer last page

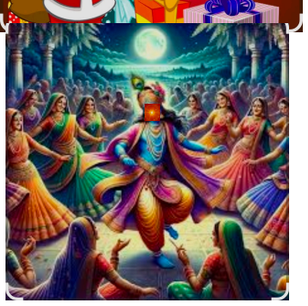

08-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

रूहानी बच्चों को राजयोग सिखाता हूँ। तुम यहाँ आते हो तो बरोबर राजयोग सीखने आते हो ना। मूंझने की तो दरकार नहीं। तो राजयोग सीखकर पूरा करना चाहिए ना। भागन्ती तो नहीं होना चाहिए। पढ़ना भी है तो धारणा भी अच्छी करनी है। टीचर पढ़ाते हैं धारणा करने के लिए।

हर एक की अपनी-अपनी बुद्धि होती है - किसकी उत्तम, किसकी मध्यम, किसकी कनिष्ट। तो अपने से पूछना चाहिए कि मैं उत्तम हूँ, मध्यम हूँ या कनिष्ट हूँ? अपने को आपेही परखना चाहिए कि मैं ऐसे ऊंचे ते ऊंचा इम्तहान पास करके ऊंच पद पाने के लायक हूँ? मैं सर्विस करता हूँ? बाप कहते हैं - बच्चे, सर्विसएबुल बनो, बाबा को फालो करो क्योंकि मैं भी तो सर्विस करता हूँ ना। आया ही हूँ सर्विस करने के लिए और रोज़-रोज़ सर्विस करता हूँ क्योंकि रथ भी तो लिया है ना। रथ भी मज़बूत, अच्छा है और सर्विस तो इनकी सदैव है। बापदादा तो इनके रथ में सदैव है। भले इनका शरीर बीमार पड़ जाये, मैं तो बैठा हूँ ना। तो मैं इनके अन्दर में

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

किन शब्दों में आपका धन्यवाद करे...
दिन रात की ये सेवा हम याद करे..

बैठ करके लिखता भी हूँ, अगर यह मुख से नहीं भी बोल सके तो मैं लिख सकता हूँ। मुरली नहीं मिस होती है। जब तक बैठ सके, लिख सकें, तो मैं मुरली भी बजाता हूँ, बच्चों को लिखकरके भेज देता हूँ क्योंकि सर्विसएबुल हूँ ना। तो बाप आकरके समझाते हैं कि तुम अपने को आत्मा समझ करके निश्चयबुद्धि होकरके सर्विस में लग जाओ। बाप की सर्विस, ऑन गॉड फादरली सर्विस। जैसे वह लिखते हैं ऑन हिज़ मैजिस्टी सर्विस। तो तुम क्या कहेंगे? यह मैजिस्टी से भी ऊंची सर्विस है क्योंकि मैजिस्टी (महाराजा) बनाते हैं। यह भी तुम समझ सकते हो कि बरोबर हम वर्ल्ड का मालिक बनते हैं।

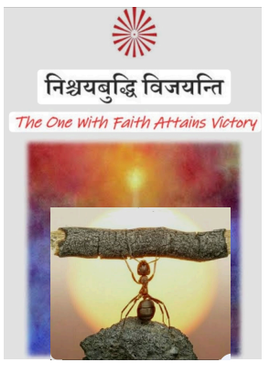

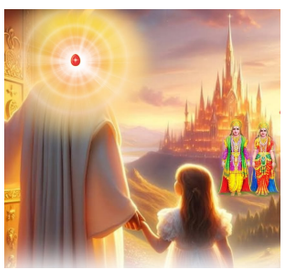

Definition of

तुम बच्चों में जो अच्छी रीति पुरुषार्थ करते हैं उनको ही महावीर कहा जाता है। तो यह जांच करनी होती है कि कौन महावीर हैं जो बाबा के डायरेक्शन पर चलते हैं। बाप समझाते हैं कि बच्चे अपने को आत्मा समझो, भाई-भाई को देखो। बाप अपने को भाइयों का बाप समझते हैं और भाइयों

को ही देखते हैं। सभी को तो नहीं देखेंगे। यह तो ज्ञान है कि शरीर बिगर तो कोई सुन न सके, बोल न सके। तुम तो जानते हो ना कि मैं भी यहाँ शरीर में आया हूँ। मैंने यह शरीर लोन लिया हुआ है। शरीर तो सबको है, शरीर के साथ ही आत्मा यहाँ पढ़ रही है। तो अभी आत्माओं को समझना चाहिए कि बाबा हमको पढ़ा रहे हैं। बाबा की बैठक कहाँ है? अकाल तख्त पर। बाबा ने समझाया है कि हर एक आत्मा अकाल मूर्त है, वह कभी विनाश नहीं होती है, कभी भी जलती, कटती, डूबती नहीं है। छोटी-बड़ी नहीं होती है। शरीर छोटा-बड़ा होता है। तो दुनिया में जो भी मनुष्य मात्र हैं, उनमें जो आत्मायें हैं उनका तख्त यह भ्रकुटी है। शरीर भिन्न-भिन्न हैं। किसका अकाल तख्त पुरुष का, किसका स्त्री का, किसका बच्चे का। तो जब भी किससे बात करो तो यही समझो कि हम आत्मा हैं, अपने भाई से बात करते हैं। बाप का पैगाम देते हैं कि शिवबाबा को याद करो तो यह जो जंक लगी हुई है वह निकल जाये। जैसे सोने में अलाए पड़ती है तो वैल्यु कम होती है तो

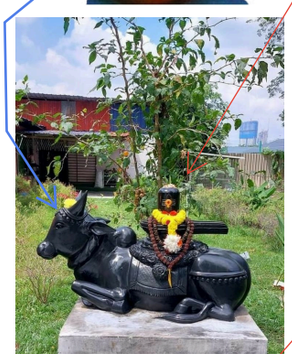

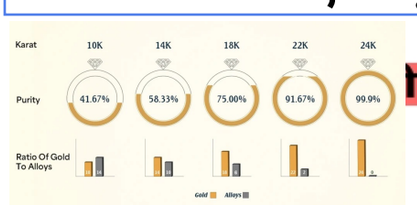

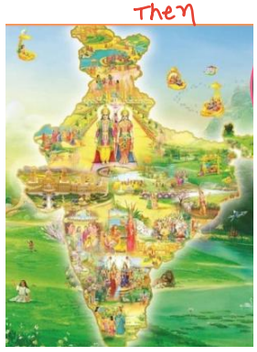

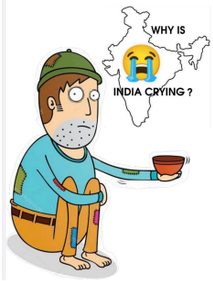

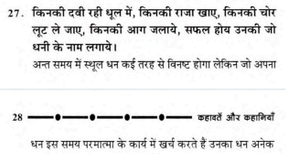
27. किनकी दवी रही धूल में, किनकी राजा खाए, किनकी चोर लूट ले जाए, किनकी आग जलाये, सफल होय उनकी जो धनी के नाम लगाये।
अन्त समय में स्थूल धन कई तरह से विनष्ट होगा लेकिन जो अपना

28 —•—•—•—•— कहावतें और कहानियाँ
धन इस समय परमात्मा के कार्य में खर्च करते हैं उनका धन अनेक जन्मों के लिए सफल होता जाता है।

08-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदा

तुम्हारी भी वैल्यु कम हो गई है। अभी बिल्कुल ही वैल्यु लेस हो गये हैं। इसको देवाला भी कहा जाता है। भारत कितना धनवान था, अभी कर्जा उठाते रहते हैं। विनाश में तो सबका पैसा खत्म हो जायेगा। देने वाले, लेने वाले सभी खत्म हो जायेंगे बाकी जो अविनाशी ज्ञान रत्न लेने वाले हैं वह फिर आकर अपना भाग्य लेंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) 'बाप को फालो कर बाबा के समान सर्विसएबुल बनना है। अपने को आपेही परखना है कि मैं ऊंचे से ऊंचा इम्तहान पास करके ऊंच पद पाने के लायक हूँ?

2) 'बाबा के डायरेक्शन पर चलकर महावीर बनना है, जैसे बाबा आत्माओं को देखते हैं, आत्माओं को पढ़ाते हैं, ऐसे आत्मा भाई-भाई को देखकर बात करनी है।

Points: ज्ञान योग M.imp.

वरदान: श्रेष्ठता के आधार पर समीपता द्वारा कल्प की श्रेष्ठ प्रालब्ध बनाने वाले विशेष पार्टधारी भव

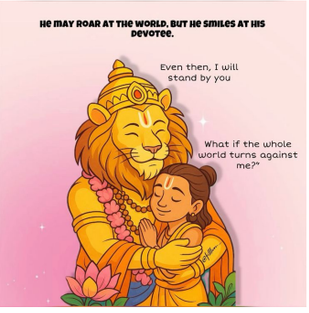

इस मरजीवा जीवन में श्रेष्ठता का आधार दो बातें हैं- 1-सदा परोपकारी रहना। 2-बाल ब्रह्मचारी रहना।

जो बच्चे इन दोनों बातों में आदि से अन्त तक अखण्ड रहे हैं, किसी भी प्रकार की पवित्रता अर्थात् स्वच्छता बार-बार खण्डित नहीं हुई है तथा विश्व के प्रति और ब्राह्मण परिवार के प्रति जो सदा उपकारी हैं ऐसे विशेष पार्टधारी बाप-दादा के सदा समीप रहते हैं और उनकी प्रालब्ध सारे कल्प के लिए श्रेष्ठ बन जाती है।

स्लोगन:- संकल्प व्यर्थ हैं तो दूसरे सब खजाने भी व्यर्थ हो जाते हैं।

Have Powerful Focus on this So,

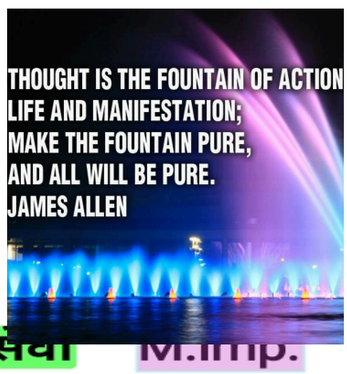

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.Imp.

अव्यक्त इशारे -

Call of time/समय की पुकार

अब सम्पन्न वा कर्मातीत बनने की धुन लगाओ

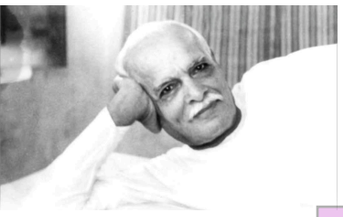

कर्मातीत स्थिति का अनुभव करने के लिए ज्ञान सुनने सुनाने के साथ अब ब्रह्मा बाप समान न्यारे अशरीरी बनने के अभ्यास पर विशेष अटेन्शन दो।

जैसे ब्रह्मा बाप ने साकार जीवन में कर्मातीत होने के पहले न्यारे और प्यारे रहने के अभ्यास का प्रत्यक्ष अनुभव कराया।

Most imp

सेवा को वा कोई कर्म को छोड़ा नहीं लेकिन न्यारे हो लास्ट दिन भी बच्चों की सेवा समाप्त की, ऐसे फालो फादर करो।

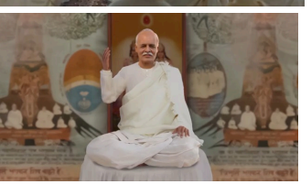

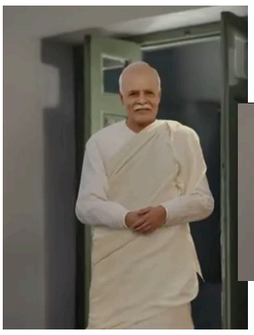

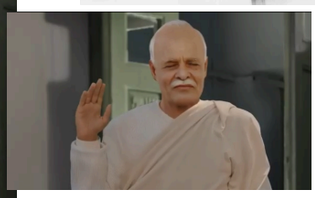

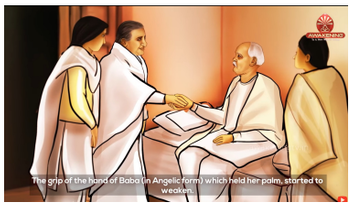

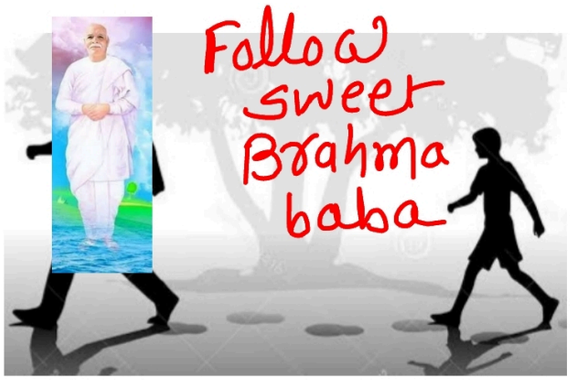

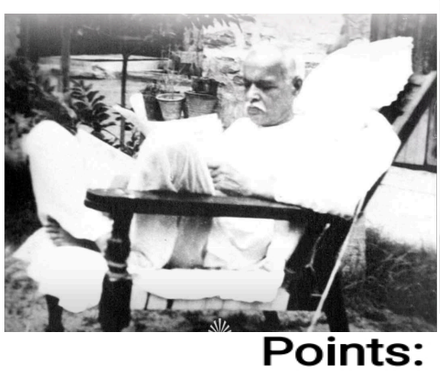

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

फाइनल पेपर

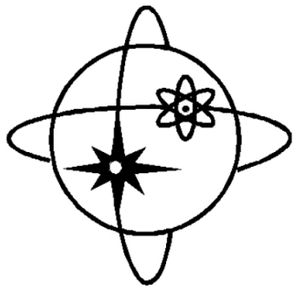

अभी समय के प्रमाण एडवांस पार्टी भी ज़ोर कर रही है तो साकार वालों को तो और ज़्यादा तेज़ होना चाहिए। होना सब अचानक है, डेट नहीं बताई जायेगी। पेपर ज़रूर आने हैं। आप लोगों के थाट्स को चेक करने वाले भी आयेंगे। पेपर लेने आयेंगे। जितनी प्रत्यक्षता होगी उतना यह सब पेपर्स आयेंगे। इस योग और उस योग, इस ज्ञान और उस ज्ञान में क्या अन्तर है वह लाइफ की प्रैक्टिकल की चेकिंग करेंगे। वाणी की नहीं। उसके लिए पहले से ही इतनी तैयारी चाहिए। 84 में कुछ न कुछ तो होगा ही। पेपर्स आयेंगे। आवाज फैलाने की तैयारी

Most imp

का यही साधन है। जैसे शुरू-शुरू में अभ्यास करते थे, चल रहे हैं लेकिन स्थिति ऐसी हो जो दूसरे समझें कि यह कोई लाइट जा रही है। उनको शरीर दिखाई न देवे। जब पहले-पहले मित्र-सम्बन्धियों के पास गये तो क्या पेपर था, वह शरीर को न देखें, लाइट देखें। बेटी न देखें लेकिन देवी देखें। यह पेपर दिया ना। अगर सम्बन्ध के रूप से देखा, बेटी-बेटी कहा तो फेल। तो ऐसा अभ्यास चाहिए। समय तो बहुत खराब आ रहा है लेकिन आप की ऐसी स्थिति हो जो दूसरों को सदैव लाइट का रूप दिखाई दे, यही सेफ्टी है। अन्दर आवें और लाइट का किला देखें। अपने ईश्वरीय सेवा में लगने वाली सम्पत्ति भी ऐसी ही क्यों जावें, उन्हें अलमारी नहीं दिखाई दे लेकिन लाइट का किला देखें। इतना अभ्यास चाहिए। शक्ति रूप की झलक बढ़ानी चाहिए। साधारण नहीं दिखाई दे। यह लक्ष्य रहे। वार तो कई प्रकार के होंगे - 1आत्माओं के वार होंगे, 2बुरी दृष्टि वालों के वार होंगे, 3कैलेमिटीज के वार होंगे, 4बीमारियों का वार होगा लेकिन इन सबसे बचने का साधन है - अनन्य बनना। अर्थात् जो अन्य न कर सकें वह करना। सिर्फ यह याद रखों कि मैं अनन्य हूँ तो भी प्यारे और न्यारे रहेंगे।

8/12/25

(10.11.1983)

9.2 सोने से पहले बापदादा को सारे दिन का पोतामेल न देने से नुकसान :

(आ) सोने से पहले सारे दिन के समाचार की लेन-देन चाहे कम्बाइन्ड रूप में करो, चाहे बाप के रूप में करो, एक दिन का समाचार दो और दूसरे दिन का श्रेष्ठ संकल्प और कर्म की प्रेरणा लो। सब समाचार की लेन-देन करना अर्थात् हल्के बन जाना। जैसे रात को हल्की ड्रेस में सोते हैं ना! ऐसे बुद्धि को हल्का करना अर्थात् हल्की ड्रेस पहनना है। ऐसे तैयार हो साथ में सो जाओ। अकेले नहीं सोओ। अकेले होंगे तो माया चांस लेगी। इसलिए सदा बाप के साथ रहो। अकेले रहने से डर भी लगता है, साथ में सोने से निर्भय भी हो जायेंगे। आप निर्भय रहेंगे और माया डर जायेगी।

जैसे अन्त में आत्मायें जो संस्कार ले जाती हैं वही मर्ज़ होते हैं, फिर वही संस्कार इमर्ज़ होंगे। इस रीति से यह भी दिन को जब समाप्त करते हो तो संस्कार न्यारे और प्यारेपन के हो गये ना! इसी संस्कार से सो जाने से फिर दूसरे दिन भी इन संस्कारों की मदद मिलती है। इसलिए रात के समय शक्ति से पुराने खाते को समाप्त कर देना चाहिए, हिसाब चुक्तू कर देना चाहिए।

Point to be Noted

जैसे बिज़नेसमैन भी अगर हिसाब-किताब चुक्तू न करें तो खाता बढ़ जाता और कर्ज़दार हो जाते हैं। कर्ज़ को मर्ज़ कहते हैं। इसी रीति से अगर सारे दिन के किये हुए कर्मों का खाता और संकल्पों का खाता भी कुछ हुआ उसको चुक्तू कर दो। दूसरे दिन के लिए कुछ कर्ज़ की रीति न रखो। नहीं तो वही मर्ज़ के रूप में बुद्धि को कमज़ोर कर देता है। रोज़ अपना हिसाब चुक्तू कर नया दिन, नयी स्मृति रहे। ऐसे जब अपने कर्मों और संकल्पों का खाता क्लीयर रखेंगे तब सम्पूर्ण वा सफलतामूर्त बन जायेंगे। अगर अपना ही हिसाब चुक्तू नहीं कर सकते हो, तो दूसरों के कर्मबन्धन वा दूसरों के हिसाब-किताब को कैसे चुक्तू करा सकेंगे?

इसलिए रोज़ रात को अपना रजिस्टर साफ़ होना चाहिए। जो हुआ वह योग की अग्नि में भस्म करो। जैसे कांटों को भस्म कर नाम-निशान गुम कर देते हो ना!

8/12/25

AmritVela.p65 81 2/18/2010, 11:58 AM

समझा?

इस रीति अपने नालेज की शक्ति और याद की शक्ति, विल-पॉवर और कन्ट्रोलिंग पॉवर से अपने रजिस्टर को रोज़ साफ़ रखना चाहिए, जमा न हो। एक दिन के किये हुए व्यर्थ संकल्प वा व्यर्थ कर्म की लकीर दूसरे दिन भी न रहे अर्थात् कर्ज़ा नहीं रहना चाहिए। बीती सो बीती, फुल स्टॉप। ऐसे रजिस्टर साफ़ रखने वाले सफलतामूर्त सहज बन सकते हैं।

The Secret of Christmas

1 year = 365 days

1 kalpa = 5000 years

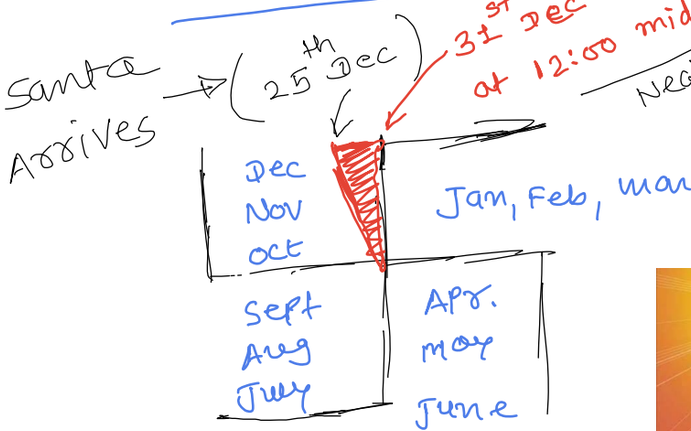

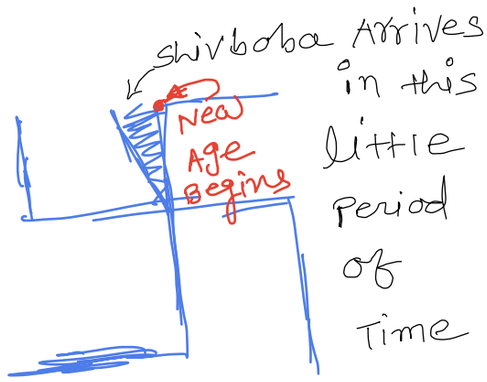

cycle of a year

cycle of drama

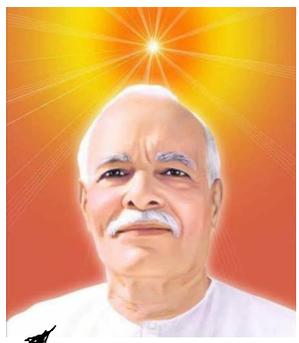

old Aged man Santa (Brahmababa) gives gift (of Heaven)

Red dress & cap denotes Shivbaba

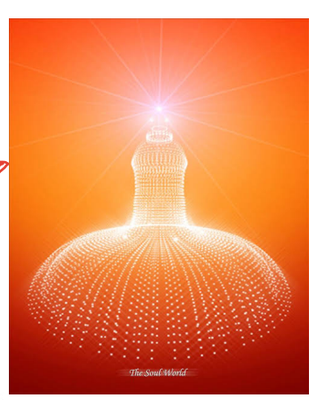

शिव भगवान उवाच: बच्चे, मैं आपके लिए हथेली पर बहिश्त लाया हूँ।